

नूवतम ॥ २ ॥ यनमात न्दनात नी. सिसान क्क दवा ना र्वा. एव द्द क्क न दाना नी. न सौ श्रा गु नूवतम ॥ १० ॥ श्री र्थ द व व मा ए व
 गु नूय न म द व ना ॥ श्रा न न्द गु व त नू र्प क्क म स ए गु नू व त म ॥ ११ ॥ य गु र्ध क्क व गु र्ध क्क यी ना म यी न वा स मा
 सा क्का क्कू र्प र य स क्क त म स क्क गु नू या र्क ॥ १२ ॥ गु नू य्वा का य वे गु र्ध गु ना गु नू स र्द ल्हा र्णी गु नू
 वा वा य सा द न पि गु सि धि क्क का य न ॥ १३ ॥ स क्क रु म क्क नी या र्प स र्ध वा धि वि व र्जि नी ॥ व द्द क्क
 पि य रा अ ल न्त्र का का ला नू व र्ति ती ॥ १४ ॥ गु नू या द्द मू द की र्गी ग गु नू स र्द लि स न द व ना ॥
 गु नू या वा रा व ल्का गी गु नू वा र्क य न म य द ॥ १५ ॥ इ ति र्गी र्गी य न य र्ध वा गु नू स र्द लि स मा क ॥ ॥

॥ श्रीगणेशायनमः ॥ नमः शिवाय ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ ॥ शृणु धर्ममुनय सर्वसर्वकामफलप्रदं ॥ असाध्यसाध
नीदेवी वैष्णवी मयराजिता ॥ नमो भगवते वासुदेवाय नमो अनन्ताय सहस्रसीर्षाय ह्रीं रोदा न वशा इने ॥ सेष
भोगयुक्तं काय गरुडवारुणाय अजाय अजिताय श्रीताय पीतवाससे ॥ वासुदेवाय संकर्षणाय युष्मन् अनी
रुद्धः रुयसिरोमहावाराहः नरसिंहः वामनः त्रिविक्रमः रामरामवरप्रदः ॥ नमोऽस्तुते असूरदैत्यदानवः
यक्षराक्षसभूतयेतपीशाचकुम्भांकटमृतनासिद्धः ॥ योगिनी उवाच ॥ किंती स्कंदपुराणानुरक्तनक्षत्रगता
ता ॥ अन्यां बहून्तन्वययवमथमथ ॥ विधं सय विधं सय विदारय विदारय ॥ विद्रावय विद्रावय शंखेन च के

नववनशूलेन ॥ गदया मुद्रालेन हलेन प्रसिं कुरु कुरु स्वाहा ॥ त्रिसहस्रबाहो सहस्रचरुना युव ॥ जय
जय विजय विजय ॥ अजितः अयराजितः अमितः अनिन्दितः अः प्रतिकृतः सहस्रनेत्र बालकलप्रकलप्रकलवि
श्वरूपवदुःखमशुसूदन ॥ महावाराहः महापुत्रः पुरुषोत्तमः नरसिंहः शुतवैकुण्ठपद्मनाभ नारायण
गेमिन्दामोदरः रिषीकेश सर्वसुरोद्धनः सर्वसन्तुष्टमर्दनः सर्वभूतप्रयंकरः ॥ सर्वदुःखप्रयनाशनः स
र्वग्रहतिवारणः ॥ सर्वपापप्रनाशनः जनार्दनः नमस्तुते स्वाहा ॥ त्रिंशद्भूमामयराजितां यरमवैष्णवीं पठति सि
द्धान् जयति सिद्धां ॥ महाविद्यां जयति पठति श्रुतिस्मरति ॥ धारयति कीर्तयति गृह्णति वयं गच्छति वातवा

तस्याग्निर्वायुवज्रोयलासिते^मयंनवरी^मबाले^मयंनसमुद्र^मलै^मयंनग्रह^मयंनचौर^मलै^मयंनः स्वायद^मजयं वार^मलै^मवे
 तु॥ केविदाद्यंश्चकारसिराजकलविद्येसत्रश्चाटनवदवधनहयंवानूषवेत्॥ ऐतैर्मन्त्रैरुदाहृतैस्सिद्धैः संसिद्धः
 पूजितैः जयान्तमस्तेनवेअनवेअनवेअजीतेअमृतेअयराजीतेयठतिसिद्धेस्मरतिसिद्धेजयतिसिद्धेसद्विद्येयेकानं
 सेउत्तमेषुवेअरुंधती॥ सावित्रीगायत्रीजातवेदसेतमस्तेसरस्वतीवरेरमनीरामनीधरनीश्वरनीतपिनीताय
 नी॥ सदेन्मादिनीसौदामिनीअदितेदीतेविनतेगौरीगांधारीमातंगीकृष्णेशोदेसर्पवादिनीवृद्धवादिनी॥
 कालीकपालीकरालीकरालतेत्रेविनेत्रेसर्वाश्चजावनकरीः सद्योमातः जलगतंस्थलगतंअतरीकंगतंवा॥

रकरकसर्वतयद्वयो^मस्त्रा^म॥ जस्याप्रनिस्रतेयुस्यांगभोवायततेजदिमृयतेवालकोजस्याकाकवंधाजदाह
 वेतुभारयेतजइमांविद्यांमृत्युदोषैर्नलिप्यते॥ राणोराननूलेदुतेसंग्रामेरियुसंकुले॥ अग्निचौरदयेद्वारेनित्यंतस्या
 जयोहवेत्॥ ससंवमयतेचैशांस्मरणेकांडवरुणी॥ गुल्मशूलाकिरोगानासयतिद्येथां॥ शिरोरोगकरानां
 यनासितिसर्वदेहिनां॥ तजथायैकाहिकद्वाहिकत्राहिकचानुर्थिकः॥ मासिकः द्विमासिकत्रिमासिकः चानुर्मा
 सिकः॥ मूर्ध्निकः वान्तिकपैतिकः श्लेष्मिकः सनियतिकः॥ खड्गजरः सततजरः विषमजरः ग्रहन्मूत्रं॥ गता
 नृशत्र्यांघ्रनहनकालीसरसरगौरीधमधमविद्येशलेचालेगंधवंधं॥ त्रयोपयमथमथविद्येनासयानास

[illegible]

रमनीरामनीताथिनीताथिनीमदोन्मादिनीसौदामिनीसोखनी॥सरणीसन्मोहिनीतिलयताकेमहानीले॥महागौ
रीमहाश्वरेण्डीमहामायुरीआदित्यवस्येजाद्वीजमन्त्रेकिलिकिलिविंतामनीसुरतिसुरत्यन्नेसर्वकामकुवेज
थामनस्मितकार्यतन्ममेसिद्धनुस्वाहा॥त्रंस्त्रंस्वाहा॥त्रंभुस्वाहा॥त्रंभुवस्वाहा॥त्रंस्त्रस्वाहा॥त्रंभुर्भुवस्वस्वाहा॥त्रंय
तएवागतेयावन्तत्रैवयतिगच्छतिस्वाहा॥वलेस्वाहा॥अवलेस्वाहा॥महावलेस्वाहा॥॥इतिविष्णुधर्मेत्तरेत्रि
तियकांडेअमुद्यवैष्णवीत्रैलोक्यामयराजितास्तोत्रसमाप्तः॥॥सुलभस्तु॥॥संवत्१७१३समयतामअग
हणशुद्धिकादशी॥सोमवासरे॥लिखितमिदंयुक्तकंश्रीयादवत्रिधाठिता॥श्रीश्यामविमलायुरीयुरिव
रावासी॥श्रीविष्णुगिरि॥याठिर्थं॥मंगलंलेखकानांरक्षावकानांरमंगलं॥मंगलंसाधुसिद्धानांलूमांनू
यतिमंगलंश्रीकृष्णयवासुधवायामविंदायनमोनम॥श्रीगामयनम॥॥

ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ

ॐ नमः शिवाय ॥ नै यद्वा सनाय या इका ॥ नै ॥ सिंहा
 सनाय या इका ॥ ॐ वैष्णव का रुव का रा सा नि न गाय य
 ॐ ननाः शु य द सा रि वा व क्षा ना ग स न ह रु वि ना ॥
 ॐ रा या वि न्द्र का य श्व व क स र्वा वि ना जि न ॥ कुरु नी श्व ग
 गा श्व व उ म नू ख द्वा क रु था ॥ वि श्व ल व न द श्व व द ध
 गी द रु वाम या ॥ नि रु च म यि नी क्षा ना हा ज ल का न म हि ना ॥ उ द्ध म स्य न सृ श्रु

च छु का बालिनी मूर्खी न क रु म य रं या द्वा दू (६) गी न यि नी श्व र्गः ॥ नी ला त्य ल
 द ला रा सा रु न सि धि गु द जि (६) ॥ कू क भा द्र नि र्द क्षा र्म म रु ल क्षी मु वा म र्क ॥
 उ मा र ग व नी स्या मा य श्वि म गु य व सि ना ॥ व दू का रा न था रि रु चि र कू ल
 गु चि त्य ना ॥ ॐ द्वा गी क ल कू स र्म य ग नू म रु मा व या र जि वा मा ला द ली नां गी
 स (ग) द द य व त्त ना ॥ मूर्खी दी वा म न ग व म स र्वा रु न क्ष न ही ॥ र्वी या दा सि
 म रु य द्वा वि दू श्व न स म सि न ॥ का ला नि त्रा द उ मा य क ठा उ व न य व सि ना ॥

ॐ कं श्वरीमिमांसा य सर्वकामरु लयदा ॥ ॐ कौ यी चूरुगवनी ॐ कौ म्यां य
 लु ॐ कात्रकायालिनी ॐ ॐ ॐ जय ॐ कं श्वरीनमस्वारा ॥ ॐ ॐ ॐ य
 लु ॐ कात्रवी विद्वरुमनी ॐ ॐ ॐ लामात्रिका श्रीमरु गन्नाषणि ॐ ॐ ॐ य
 वादयान् ॥ ० ॥ जयस्मान् ॥ ॐ ॐ ॐ यासा गश्यववक्र यत्रमीननय ॐ नन्दवा
 दसरादा ॥ यामूर्ति सर्वमूर्ति यत्रमयत्रसिगा कृष्णमूर्ति न (थका) यानिमनाय
 यादागिरुवधनमिगाद्र स्यनाया यद्रति, सार्सक यस्वरी यं जतक शुखददा

नन्दलक्ष्मी ददाणि॥ ज्ञादवीनवर्वधूकतिराः श्रीकृष्णैकथयासकित्यान
वगानतिरुतयनाः कानविज्ञागुरवाः॥ गुरुसु वृषवाहतिरुगवनिः श्री
चतुर्जागेश्वरी यायाद्वयनमश्नेत्रीरगवना श्रीदेवर्षिकेश्वरी॥ ॐ निश्री
र्षिकेश्वरी यूजाविप्रिसमाय॥ सम्वत् १५५० मार्गशुक्ल चतुर्थ्यानि (शे. पूर्वशुद्ध
तद्वत् यत्रिद्यज्ञाग यथा कर्तुं सुदूरं यथा चन्द्राजिगर्ग चन्द्रमसि॥ सम्वत् १५५२
१ कलि कयान सत्वां मे माना भूय श्रीरामायान॥

१३ नमः प्रीति कियूजा ॥ आचमन ३ ॥ न्यास ॥ त्रै ३ ह्रूं ह्रुदय नमः ॥ त्रै ३ ह्रूं सि
नमः ॥ गिआय ॥ कवचाय ॥ नग्नयाय ॥ अस्त्राय ॥ त्रै ३ आधनादि
ह्रुदय कियूजा ॥ त्रै ३ गृत्तनाय याइकी ॥ त्रै ३ ह्रूं ॐ का ग क थ रु न
सिद्धि याइकी यूजा यामिनमः ॥ वलि ॥ कामला कमल ह्रीं गी या ॐ लि ३ ॥ वलि ॥
गंयमूदा ॥ त्रै ८० उठ ए ट व र्ज ह्रुदि सुहृदास मृषाय वैमू यै रु न सिद्धि
वटी के नै नै सृष्ट कामना रुद यै ८ रु रै नवाय याइकी ॥ ३ अद्या न अमा

धवन रु विमल द्यौं टं रु न सिद्धि याइकी ॥ व ३ (ग ए यू जा ॥ वक्रा आदि ८ ॥
ॐ न्द्रादि १० ॥ थन वृ रु न सिद्धि यूजा विधि ॥ ॥ आचमन ३ ॥ न्यास ॥ आधना
दि ८ ॥ वृषासनाय यायू ॥ त्रै ३ ह्रूं न ग क थ रु नमः रु रै नवी याइकी ॥ वलि ॥
त्रै ३ वाग् वमन ह्रीं गी ॐ लि ॥ वलि ॥ प्रीतुल मूदा ॥ त्रै ३ क र ग य ट क व र्ज मुख
वा नाना ॐ ला य नूद ग कि च चि का य गु लि नै आ (न यै वा र्ज वै ॐ रु रै
नवाय याइकी ॥ त्रै ३ अद्या न अमा धवन रु विमल द्यौं रु नमः रु रै नवी

दधी पाइको ॥ अर्ध (ग) द्यूडा ॥ वृक्षादि ॥ इत्यादि १० ॥ ॥ त्यास ॥ आ
भनादि ॥ त्रै ३ मयूनासनाय पाइको ॥ कुं किया गक य कामात्री दधी पाइ
को ॥ वलि ॥ गकि वी जमनु ए गुया ३ लि ३ ॥ गकि मुडा ॥ त्रै ३ वरुड गद
ववर्ज क (६) वृक्षा गकि उहा ये कोमात्री योग ये के वरुड को ये याम्य गकि वी ३
उरु रो नवा य पाइको ॥ अमा द्या ने अमाद्य वनद विमेल चो व कोमात्री दधी
पाइको ॥ अर्ध (ग) द्यूडा ॥ वृक्षादि ॥ इत्यादि १० ॥ कृण वरुड वृ ग द या गी ली व

लावय ॥ कुं जी ज्ञानाधनदी य जालनी दधी महाजिह्व कृण वालाय वलि गृद्ध २
खाहा ॥ त्रै ३ उरु वृक्षा गुभा वात्यादि ॥ त्रै ३ सर्व त्याया गिनी त्य ४ ॥ सर्व रुग्ण त्य ४
सर्व रुग्ण मिहिग त्य ४ ला क वासिनी त्य त्रिमा यूडा वलि गृद्ध २ खाहा ॥ स सा ने व
अ ग्या ल द कि ए ॥ अ य दी य ज्ञाय साय ॥ ॥ १ दी सि यू वधि काली अत्रु ए न
वनि रा काल नणी रावानी गी यूती कृकि का ज्ञान वन व कथिना श्री सिद्धिल
की यना ॥ रासा ना काय ना कवि रु वत रुत नि रा रु ना रु ग्य नी व न का ग म

लीलायी च चिका गुलिनीमाहु श्वरी मृगयौ सख्यायी नृकः ४ नृरं नवना
 थ ग्रीयाइकां पूजयामि ॥ श्वरी नव ॥ ॥ नृं कौं ग्रीं शुं कौं ॥ मयूना सनाथी
 याइकां पूजयामि नमः ॥ ॥ नृं कौं ग्रीं शुं कौं ॥ मयूना सनाथी
 मलाया गिनी ग्री ग्री याइकां पूजयामि नमः ॥ ॥ नृं कौं ग्रीं शुं कौं ॥ मयूना सनाथी
 कं कं कं कला यन उहायी गी गयी केवर्कि ॥ नृं कौं ग्रीं शुं कौं ॥ मयूना सनाथी
 थ ग्री याइकां पूजयामि नमः ॥ ॥ नृं कौं ग्रीं शुं कौं ॥ मयूना सनाथी

गिनाकि यनम स्याह ॥ जाय ॥ ॥ पुन ॥ ॥ नृं कौं मयूना सनाथी ॥ सनमान् ॥ स्यामव
 धूस् (गशिगा) गं खचक्र गदरुसा देवूवी चनमाहुन ॥ ७ ॥ महिषासनाथी नक
 वधूस् (गशिगा) मूला माला धला यवी वा नाही चनमाहुन ॥ ८ ॥ यही ग नमान्
 कं कं मवधूस् (गशिगा) वक्ररुसा धनायवी ॥ ९ ॥ यती चनमाहुन ॥ याम्भूयय
 कान् भूयय चन्द्रस् (गशिगा) दमनूया गधनायवी चमूय ययनमाहुन ॥ नसर्ग
 सुमहालक्ष्मी नमानमः ॥ उकिमूकि यययवी नमान् सनमानमः ॥ हिंहासन गनाद
 वी वायना ग कसरु वा कानासुन विनासानी ॥ महालक्ष्मी नमान् ॥ ॥ ॥ निग

मः गव्ययामि ॥ नूँ कौँ सौँ ॥ यमसाचार्य गुत्रस्थानमः गव्ययामि ॥ नूँ कौँ सौँ ॥ यमसाचार्य गुत्रस्थानमः गव्य
 यामि ॥ नूँ कौँ सौँ ॥ यमसाचार्य गुत्रस्थानमः गव्ययामि ॥ नूँ कौँ सौँ ॥ रूँ गीसंगव्य गुत्रोपायनिवद्यगव्य
 येन मयी कृत्वा ॥ थवजिनसद्यचक्रसदवी श्रवा ॥ वडु ॥ यी ० मनुजपूजायाय ॥ चन्दनाकगव्ययामि ॥
 चक्रसद्यजसनपूजनं थनमाल ॥ थननी चडुपी ० पूजायाय ददयाकयाय ॥ नूँ कौँ सौँ ययय
 सनायनमः आवाहनयाय ॥ त्रिखं अमृदावधनयाय ॥ नूँ कौँ सौँ मलायसवनानकभुक्तानल
 नन्दविग्रह सर्वस्वगहिनसान नृकहियनमः श्रीशक्ति नमस्तुता ॥ निश्चक्रपूजाया ॥

[illegible]

लाकवाला यश्याया॥ नै३ छ नूयकी त्या श्याया॥ नै३ अ निमादिद गसिद्वि या गिनी त्या ४ घाया॥ नै३ अँ अँ सि
नी मादि अँ अँ नव अँ वका आदि अँ माट क त्या श्याया॥ नै३ दाँ सर्व सं आरिन्यादिद गमूडादवी
श्यायाइ॥ अँ अँ सो ४ प्रिय नानि त्या चक्र श्वरी श्याया॥ नगा ४ एक ठ या गिन्य सुलाक भाहनय कुरा
वो यचार ४ संयूजिगा ४ सनु संगर्विग सनु॥ दाँ सर्व सं आरिनी मूडी यनम॥ नै३ अँ कामाक विन्ना
दिनि त्या आठ गकला श्याया॥ नै३ कौ सो ४ प्रिय न जानि त्या चक्र श्वरी श्याया॥ नगा ४ एक या गिन्य ४ सर्वा
गादनक यक्र सर्वो यचार ४ संयूजिगा ४ सनु संगर्विग सनु॥ दाँ सर्व विद्रा विली मूडार्थनम॥ ॥२॥

11211

॥३॥
२ नै ३ कै १ श्रै नंगकू समादि अक्षानगै शक्ति शाय ॥ नै कौ कौ गि पून सून नी नि त्या च कू श्र नी शाय ॥
५ ना १ या गिन्य १ सर्व सं ज्ञा रा का न क च कू सर्व व यार्थ १ सं यु जि गा १ स नु सं न र्थि गा स नु ॥ कौ सर्वा क र्ष ना
म दार्थ न म ॥ ३ ॥ नै ३ सर्व सं ज्ञा रि न्या दि च उ र्द श शक्ति शाय ॥ द्रौ कौ सौ १ गि पून वा सि नी नि त्या च कू श्र
नी शाय ॥ नू ना १ सं यदा य था गिन्य १ सर्व सौ रा अ दाय क च कू सर्व व यार्थ १ सं यु जि गा १ स नु सं न
र्थि गा स नु ॥ ४ ॥ यूँ सर्व व र्ण क नी म दार्थ न म ॥ नै सर्व सि द्धि य र गि द श न नि त्या शाय ॥ हँ कौ कौ १ गि
पू ना श नि त्या च कू श्र नी शाय ॥ नू ना १ कूल को ल था गिन्य १ सर्व र्थ सा ध क च कू सर्व व यार्थ १ सं यु ना स

नमः॥ नैऋतौ सौः कूं श्रुतिचक्रकामजिह्वालय, मेघीशानन्दनाथामिक, कामधनीरूपात्मजकि
श्रीवाइ॥ दक्षका॥ नैऋतौ सौः दूं सूर्यचक्रकालधनीरूपात्मजश्रीवाइ॥ दक्षका॥ नैऋतौ सौः दूं
दक्षीविष्णुसजकिश्रीवाइ॥ वामका॥ नैऋतौ सौः दूं सामचक्रपूर्वजिह्वालयगङ्गा, उड्डुडीशानन्द
नाथामिकरागवालिनादवीवृक्षात्मजकिश्रीवाइ॥ सु० कूं दूंः त्रिनाम्नाचक्रशीलियाश्रीवाइकीः
नगा॥ नरुस्यानिनरुस्यथागिन्यसुर्वसिद्धिप्रदचक्र, सर्वोपचारः॥ संयुजिताः॥ सन्तु संगर्ध्याः॥ स
न्तु॥ दूंः॥ वीजमूलायेनमः॥ मूलाकन॥ ८॥ नैऋतौ सौः कूं सर्वथासयथासवक्रचक्र, उज्जानवी

१० चर्यानन्दनाथामिकश्रीमहाप्रियूनसूदनीदक्षीपरीवृक्षात्मजकिश्रीवाइ॥ म० श्रु० नैऋतौ सौः
दूं श्रीमहाप्रियूनसूदनीमहाराष्ट्रिकाचक्रचक्रश्रीनीलियाश्रीवाइ॥ दूं दूं दूं प्रियूनर
नवीचक्रश्रीनीलियाश्रीवाइ॥ नगा॥ यनायनातिनरुस्यथागिन्यः॥ सर्वानु० ३ ३ ३ नमः सर्व
न्दवमहाचक्र, सर्वोपचारः॥ संयुजिताः॥ सन्तु संगर्ध्याः॥ सन्तु॥ ८॥ वा० गानित्यापूजायाया
नैऋतौ कामधनीरूपात्मजश्रीवाइ॥ नैऋतौ रागमालिनीश्रीवाइ॥ दूं नैऋतौ श्रुतिचक्रकामजिह्वालय
श्रीवाइ॥ दूं सानित्याकिन्नश्रीवाइ॥ दूं श्रुतिचक्रकामजिह्वालयश्रीवाइ॥ दूं दूं दूं संयुजिताश्रीवाइ॥ नैऋतौ सौः कूलसूद
नश्रीवाइ॥

१ॐ क्रीं व ग ल मू खि स र्व इ क्षा र्त्ता वा वा म र्थ स रा य जि म्भु की श्र न्द य र्व द्वि ना य क्रीं ॐ स्वाहा ॥
 १ क्रीं क्रीं क्रीं दूं दूं क्रीं क्रीं दं र्पी न का नि क क्रीं क्रीं क्रीं दूं दूं क्रीं क्रीं स्वाहा ॥ का नि या म र्त्त ॥
 १ क्रीं क्रीं दूं दूं स्वाहा ॥ व क्त्र या मि नि या म र्त्त ॥ ॥ १ नूं दूं दूं सि द्वि न क्त्र मि ॥ ॥ १ हूं नूं रा व न सा नि ॥
 १ नूं नूं कामा नि यी ० कामा न न्द ना थ का म श्व त्री य त्री य ना म्ना द द्या ये ॥ वा का या ॥ १ नूं नूं आ दि या
 न यी ० आ श्रान न्द ना थ आ ती श्व त्री य ना म्ना द द्या ये ॥ ग म (श्च) य ल य मि ॥ नूं नूं हूं द्या य ल य मि
 प्र या ला य ॥ ॥ नूं नूं हूं रु क्त्र श्व त्री य ना म्ना द द्या ये ॥ ॥ मृ ग रू ली य नि म ल ल ॥ प्र या गा दि, श्रु ति
 गा म्ना दि, वृ क्ता दि, ज कि न्या दि, रु द्र का दि ॥ ॥ म (श्च) ॥ नूं नूं व व ग म्ना य ॥ नूं नूं हूं उ न्म ल रो न वा य ती ॥ ॥

ॐ स्वामीजीसहित ॥ ५७ ॥

ॐ नमो गीगन सायनमः ॥ गीगु लू स्थानमः ॐ साधवा साधवा वापि साधवा साधवा लियू सू मलनि
साधका सर्व सर्वकार्ज साधव आधिति स श्रु दलक कम विवर्ज स गन थाय हलिमदि
लिसिंवन थाय धुद (आस थायन थाय क म्यान स गय आल वग था वन न क्का दू कायल गुंन
ज आसन न यय्य रुयं थाय नवर्त्त न ज वस सका थायन क कायन द वन न दवी द वि द वन
न विव का नाऊ सय ना यय ४ थम रुनिया जालन ॥ डिम वू गद सलि मना स इ इ थन डिम वू गद
ऊं ज थन आल गि डिम वू १७ लं यद्यन स सिंवन यल्यं विवर्ज थाय यगन हलिमदिलि थाय ॥

धथ वषव स थायन थाय इ इ यग स थायि निवड थं थाय धथ व ज व स थायन थाय आसन का
यल स पूवा कि गुं वा गुं गद स रुखाल स्थान वा गाय क जाय मा ना थ न धे न न म रु प्रदिय
मं ग काय क ॐ दिय कं ऊ ग जा गि व रु माल यम रु स्व लि आ यं गि सर्व सी सार्य मारुं वी उ मा
रु स्व लि ॐ क्कां क्कां गी यग स्थान न सा क काय ४ आन मडा ॐ पि थियि ज था स क सलिल ज था श्रु
ल न व का गि ना यूस्य मा ना व का विवू म रु स्व ल गि नि वं द व र्थ था यू ज व द वि सु न्द लि वाला
ॐ क्कां क्कां गी द रु ज रु वि ना सि र्थ आ गानि को गि यलि वृगा र्थ ॐ क्कां क्कां गी म रु र ल वि गि यल सु न्द

निवानार्थविद्यानेसहाविद्यानेडंडग्यद्वयलकनिस्त्राहाः ॥ गिसन्तुनयक्रमश्चदृष्ट्यदयान्
ॐ आगर्कउमहारागावकाविष्णुमहस्वनाभ्रवसुकि, यनामोका, मार्कठहिमाहस्वलिहाज
वलथ, गनादादसमृद्धा, मृद्धासशिर्वदथग ॥ ४ ॐ कामाकावलदादवि, निलयवर्गवासिनिर्वद
विजगगमागा, आनिमृद्धानमस्तु नः ॐ ऊं ऊं श्रीनेकायुवाक, ॐ वगनाश्वः यिसायाश्वः नाकसाश्वः
महासूना, अयययं उ नगुगाः चक्रयुजाकत्राभरुनेकायुवाक, कायाव, ॐ वृक्षयुवगगृष्ट
यागात्ययुचक्रकिगा, शुभोवाप्तिमिगाऊश्व, नगुगृष्टगिसर्वलि, गनादादसप्रदिप, प्रजाल, व

लिंदयाण्डज्ञार्थयसवास्तुसा, जज्ञार्थयसुवागर्न, अगस्त्रायागयस्यामि, गत्मागुडहृववध
दवगाप्रिदिदानन, जाउनायगविनासिच, वल्लिकावलिलूयाय, कगगायनभातमकगल्येन
वलिंदविगृष्टिर्वाकालनागिक, विगारावमहालिलकसां दविचलिक, लक्षार्थवधनभाति, मुक
यभासिभासयादद्याप्रिगिसमूयाय, स्वर्गगकयष्टगर्म, थालंदरुनकनालाय, लकसांसप्रिः
यसदा, वलिं गृष्टजयंदरिपसूलक, समासक, गवखक्षमादार्य, सन्तुसूचयग ॐ असिदिस
सनर्यगिद्विषागा, भूनासद, श्रीगशोविजय, श्वेव, धर्मयानन सास्तु न, वागवृवस न, लक्ष्मी
म

[illegible]

१ नैऋतं शक्रं ४ पूषं आनन्दं शक्रिणं नवानन्दं प्राविद्यत यमं शानवीं लभ्यते मम लभ्यते लभ्यते
काययादूका ॥ नैऋतं शक्रं ४ पूषं आनन्दं शक्रिणं नवानन्दं प्राविद्यत यमं शानवीं लभ्यते मम लभ्यते लभ्यते
दन्तयुक्तं ४ यादूका ॥ नैऋतं शक्रं ४ पूषं आनन्दं शक्रिणं नवानन्दं प्राविद्यत यमं शानवीं लभ्यते मम लभ्यते लभ्यते
काननीन सोमं ४ शक्रं ४ यादूका ॥ नैऋतं शक्रं ४ पूषं आनन्दं शक्रिणं नवानन्दं प्राविद्यत यमं शानवीं लभ्यते मम लभ्यते लभ्यते
मि ॥ ३ ॥

२०३३ सं ४ अमृतिश्च नराद्या नकायमहालक्ष्मी न किमहि न यथा इका ॥ १ ॥

५२ ॐ ह्रीं क्लीं सुह्रूं ह्रीं ॐ सोमं ह्रीं हाटक ज्योतिर्महा रीतवायनमः ४ अर्द्ध यामूलमन्त्र ॥

इह गुरुनिवालिनि उँ चन्द्राग्रने स्यादा, उँ गस्मी न आ कालं कालं मालिनि हू लिनि इह
गुरुनिवालिनि उँ चन्द्रनायका ने स्यादा, उँ हू सिनि न आ कालं कालं मालिनि हू लिनि इह
गुरुनिवालिनि उँ चन्द्रा ने स्यादा, उँ राकि न आ कालं कालं मालिनि हू लिनि इह गुरुनिवालि
नि उँ चन्द्रवने स्यादा, उँ दु म न आ कालं कालं मालिनि हू लिनि इह गुरुनिवालिनि उँ लू
चन्द्रा ने स्यादा, उँ ब्रह्म न आ कालं कालं मालिनि हू लिनि इह गुरुनिवालिनि उँ शनि च
दिकाने स्यादा, उँ उग्रचन्द्रा चन्द्रा चन्द्रा ग्रचन्द्रनायका चन्द्रा चन्द्रा वनि श्येव, लू चन्द्रा

शुभियदिकाः ति मस्तरे लवे स्यादा, यागकाय उँ यययययसादन विव न य त म अ
गानि य म सा क ग य सादन य धर्म याग्र न सा भर्ह ॥ उँ क्रीं क्रीं उँ दं दं दं दं उय नानि दिय न द वि
द व ना दं दं दं दं उय नानि इति यं याग्र न सा भर्ह ॥ उँ क्रीं क्रीं श्री उँ नं नं नं नं मि मृ प्रि च व का विष्
म हृ ज्य न ग्रा क्तं तं शि गं द वि, मि मि यं याग्र न सा भर्ह ॥ उँ क्रीं क्रीं श्री उँ यययययय चन्द्र व नि च क्र
म च्च निवा सि नि च या य लि गृ रु द वि च उथं याग्र न सा भर्ह ॥ उँ क्रीं क्रीं श्री यययययय च वानं या न या
ग्र वि यं मि च य न मा न च न व वि यं च म याग्र न सा भर्ह ॥ उँ क्रीं क्रीं श्री उँ यययययय य न य कं य न र ह
द श्री न

थेवि विषकनकलत्तारि सकलचन्द्रसाले ससात्रनाले सकनइलिगहाले सुन्दलि अर्यनमस्तु ॥
 ॐ वागामन्त्रिकनाकि मम हृदयस्त्रिम नायन्त्रि प्रयन्त्रि द्यालिङ्ग रूपविगिकगविकगगनी
 विलचन्द्री रावानिवालयवालययं इमो लयमर्गे गङ्गुङ्ग म्भारि सकलचन्द्री कालिक काललूयि
 यवननवकृतिवालनिकिलिर्यनमस्तु ॥ १ ॐ आयि शानन्दवले शृमृगकलगले श्रुदिसकि प्र
 माये मायि मायकूलयिहृ निकमनि वले वामर्गगे सलंगे ग्यानि ग्यानार्थलूयिर्न लिनयलिमलि
 नाद ॐ कायमूर्ति आगाशागमनर्हृ प्रितु वन वासकलित्वरु सुन्दलिनमस्तु ॥

